International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 18 March - April - 2025

ऐतिहासिक अध्ययन मे भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

डॉ. कविता राजेंद्र तातेड

इतिहास विभागाध्यक्ष

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय यवतमाळ

Corresponding Author – डॉ. कविता राजेंद्र तातेड

DOI - 10.5281/zenodo.15245407

सारांश:

ज्ञानराशी के संचित कोश का नाम साहित्य हे, जिसके चिंतन, मनन, परिशिलन से बौद्धिक विकास होता है.भारतीय इतिहास के संदर्भ मे कहा जाता है की इतिहास लेखन के प्रति भारतीयो की विमुखता भारतीय संस्कृती का भारी दोष है. अलबेरूनी तथा अन्य युरोपीय इतिहासकारोने भारत के इतिहास लेखन के संदर्भ मे, प्रश्नचिन्ह उपस्थित किये है. किंतु प्राचीन भारत से प्राप्त साधनोसे ज्ञात होता है कि भारतीयो ने इतिहास लेखन को अपने जीवन मे स्थान दिया था. प्रस्तुत लेखमे प्राचीन भारतीय इतिहास प्राचीन भारतीय इतिहास के संदर्भ मे साहित्य के विविध प्रकार की जानकारी के साथ ऐतिहासिक साधन के रूप में अध्ययन किया गया है.

की वर्ड :. वेद, पुराण, भाषा, पुराभिलेख, आलेख, स्मारक, ग्रंथ.

प्रस्तावना :

मानवीय कार्य ,व्यवहार को नियंत्रित करने वाले कारको एवम तत्तसंबंधी सामाजिक घटना एवं समस्या विषयक नवीनतम ज्ञान प्राप्त करने संबंधी तथ्य परक एवं व्यवस्थित छानबीन को हम सामाजिक शोध कहते है. सामाजिक विज्ञान के तहत आने वाले सभी विषयो के अध्ययन की प्रमुख विषय वस्तू मुख्यतः मानवीय कार्य व्यवहार और सामाजिक अंतरसंबंध से जुडी हुई होती है. इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, भाषा साहित्य इन सभी विषयो के तहत किये जाने वाले शोध सामाजिक शोध की श्रेणी में आते है. ये सभी विषय प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से एक दुसरे से सह संबंधित है. वर्तमान समय इन विभिन्न विषयो के अंतर्विद्याशाखीय अध्ययन महत्त्व दिया जा रहा है. भारतीय ज्ञान परंपरा को ऐतिहासिक अनुसंधान का मूलभूत आधार माना जा सकता है.

शोध को अंग्रेजी भाषा मे डिस्कवर, (Discover) इन्वेंशन (Invention) एवं रिसर्च (Research) कहा जाता है. ऐतिहासिक संशोधन के संदर्भ मे रिसर्च को ज्ञात तथ्य की नवीन व्याख्या भी कह सकते है.

Production of Knowledge अर्थात ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार किसी भी शोध का प्रमुख उद्देश होता है. अमेरिका के प्रख्यात दार्शनीक चार्ल्स पीयर्स ने ज्ञान के चार प्रकार बताये है जो निम्नलिखित है..

A. दृढआग्रह: कुछ ऐसे सर्व भूमिक सत्य होते हे जिनके प्रति लोगो का दृढ आग्रह होता है. इस प्रकार के सत्य जब बार बार लोगो द्वारा प्रकट के जाते है तो इनके प्रति और अधिक विश्वास उत्पन्न हो जाता है.

B. विषय तज्ञ एवं धर्मग्रंथो के विचार: विषय तज्ञ एवं प्राचीन धर्मग्रंथ मे प्रतिपादित विचार स्थापित सत्य के रूप मे स्वीकार कर लिये जाते है.

C. अंतर्ज्ञान: कुछ ऐसे ग्यान होते है जो हमे अपने अंतर्गत ज्ञान से सत्य लगते है, एवं जो हमारे तर्क की कसोटी पर खरे उतरते है.

D. विज्ञान संमत ज्ञान: वैज्ञानिक प्रविधी से प्राप्त ज्ञान विज्ञान विज्ञान के श्रेणी मे आता है.

उपरोक्त चार प्रकार के ज्ञान मे विस्तार हेतू अनुसंधान किया जाता है. ज्ञानप्राप्ती के लिए सामाजिक अनुसंधान मे वैज्ञानिक प्रविधि के उपयोग पर अधिक बल दिया जाता है.

एडवर्ड मेयर के अनुसार.." कारणो का अनुसंधानही ऐतिहासिक शोध तथा ऐतिहासिक आवश्यकता है."

फ्रान्सिसी क्रांती मे अहम भूमिका निभाने वाले महान विचारक मोंटेस्क्यू ने कारण की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत की..."बिना कारण के कोई घटना घटीत नही होती और घटना का लेखाजोखा इतिहास है. प्रत्येक राजवंश के उत्थान, राजत्व काल एवं पतन के पीछे कुछ नैतिक या भौतिक अर्थात सामान्य कारण होते है एवं जो कुछ भी घटीत होता है इन्ही कारणो के तहत होता है."

प्राचीन भारतीय इतिहास के अनुसंधान के संदर्भ मे साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्त्रोत के साथ ही विदेशी यात्रियों के विवरण भी उपलब्ध है.

1. साहित्यिक स्त्रोत (Literacy Source): विभिन्न साहित्यिक ग्रंथो से प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जा सकता है, इसे दो भागो मे बाटा जा सकता है.

धार्मिक साहित्य (Religious Literature): इसे भी वैदिक साहित्य, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य इन तीन भागो मे बाटा जा सकता है.

वैदिक साहित्य: इसके तहत वेद, ब्राह्मणग्रंथ, उपनिषद, वेदांग, महाकाव्य, पुराण ,स्मृती ग्रंथ आते है.

वेद भारत के सर्व प्राचीन धर्मग्रंथ हे. वैदिक कालीन संस्कृती के ज्ञान का एक मात्र स्त्रोत होने से वेदो को ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त है. ऋग्वेद, सामवेद ,यजुर्वेद, अथर्ववेद यह वेदो के चार प्रकार है. वेदो के माध्यम से पूर्व वैदिक एवं उत्तर वैदिककालीन इतिहास की परिपूर्ण जानकारी मिलती है. वैदिक साहित्य को तीन युगो मे बाटा जाता है.. वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक और सूत्र का युग .

वेद: ऋग्वेद का अधिकांश भाग देवस्तुतियो से भरा हुआ है. इसके कुछ मंत्र ऐतिहासिक घटना का उल्लेख करते है, दस राजाओके युद्ध का उल्लेख मिलता है. शाकल, वास्कल, अश्वलायन, शाखायन, मंडुक्क्य यह ऋग्वेद की पाच शाखाए है. ऋग्वेद मे दस मंडल, 1028 सूक्त एवम विविध ऋषीयो द्वारा रचित कुल 10580 ऋचाये है. ऋग्वेद के दसवे मंडल के पुरुषसूक्त मे प्रथम बार वर्णव्यवस्था की उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है.

साम का शाब्दिक अर्थ गान है. इसमे यज्ञ के अवसर पर गाये जाने वाले मंत्रो का संग्रह है जिसे भारतीय संगीत का मूल काहा जात है. यजुर्वेद मे यज्ञ संस्था के नियम एवं विधी विधानों का संकलन मिलता है ,यह कर्मकांड प्रधान है. इस ग्रंथ से आर्यकालीन सामाजिक धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है. ऐतिहासिक दृष्टिकोन से अथर्ववेद का महत्व इसलिये अधिक है की इसमे सामान्य मनुष्य के विचारू तथा विश्वासो का वर्णन मिलता है. इसमे कुल 731 श्लोक एवं लगभग 6000 पद्य है. इसमे विविध विषयो जैसे आयुर्वेद, चिकित्सा, भूत प्रेत ,जादूटोणा, समन्वय ,राजभक्ती ,विवाह व प्रणय गीतो का विवरण मिलता है.

ब्राह्मण ग्रंथ: सभी वेदो के अलग अलग ब्राह्मण ग्रंथ है. कर्मकांडो के साथ इन मे सामाजिक विषयो का भी वर्णन है. प्रत्येक वेद के ब्राह्मण ग्रंथ निम्नवत है..

A. ऋग्वेद: एतरेय तथा कौशितकी ब्राह्मण ग्रंथ

B. यजुर्वेद: शतपथ, वाजसनेय, तेई तरीय ब्राह्मण ग्रंथ.

C. सामवेद: पंचवीश तथा पांड्य ब्राह्मण ग्रंथ.

D. अथर्ववेद: गोपथ ब्राह्मण ग्रंथ

इन ब्राह्मण ग्रंथ से हमे राजनीतिक इतिहास की जानकारी मिलती है. विशेष कर उत्तर भारत के महाजन पद तथा गणराज्य का परिचय इन ग्रंथो मे मिलता है.

अरण्यक: इन की रचना अरण्यो अर्थात वनो मे पढाई जाने के निमित्त होने के कारण तिने अरण्यक कहा गया है. ब्राह्मण ग्रंथो के दार्शनीक पक्ष की निष्कर्षात्मक व्याख्या अरण्यको मे हुई है. ये इतने पवित्र माने जाते थे

की इनका पठण पाठण अरण्य के अतिरिक्त कही भी निषेध था. इनमे ज्ञान एवं चिंतन को प्रधानता दी गई है. इन दार्शनीक रचना सेही कालांतर मे उपनिषदो का विकास हुआ. शाखायन, तैतिरिय, बृहदरान्यक, जेमिनी, मैत्रायानी, तल्वकार आदी प्रमुख अरण्यक ग्रंथ है.

उपनिषद: उपनिषद का अर्थ हे गोपनीय या ब्रह्मज्ञान के सिद्धांत. ये भारतीय दर्शन के मुख्य स्त्रोत माने जाते है. इन्हे अरण्यको के पूरक के रूप मे भी माना जाता है. इनमे मुख्यतः आत्मा, परमात्मा, सृष्टी की रचना तथा प्राकृतिक चमत्कारो का वर्णन मिलता है. इनकी संख्या 108 हे जिम मे दस मुख्य माने जाते है. कठोपनिषद सबसे प्राचीन माना जाता है. छानदोग्य उपनिषद मे उस काल मे पढाई जाने वाले विषय की सूची मिलती है. इसी उपनिषद मे ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थआश्रम, वानप्रस्थाश्रम इन तीन आश्रम का उल्लेख मिलता है. चौथे आश्रम संन्यासाश्रम का उल्लेख जावाली पनिषद मे मिलता है. सत्यमेव जयते वाक्य मुंडकोपनिषद मे मिलता है. इस प्रकार उपनिषद प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के प्रमुख स्त्रोत है.

वेदांग: वेदुका यथिस्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेदो का अर्थ ठीक से समझने के लिए वैदिक काल के अंत मे 6 वेदांगो की रचना हुई.

1. शिक्षा: वैदिक स्वरूप की शुद्ध उच्चारण विधी.

2. कल्प: वह सूत्र जिसमे कर्मकांड, धर्म व्यवस्था, यज्ञ, संस्कार विधी, आदीका वर्णन मिलता है.शूल्वसूत्र, श्रुत सूत्र, गृहसूत्र एवं धर्मसूत्र इसके चार प्रकार है.

3. व्याकरण: शब्दो की मी माणसा करने वाला शास्त्र व्याकरण कहा गया है, जिसका संबंध भाषा संबंधी नियम से है. व्याकरण की सर्वप्रमुख रचना पाणीनीकृत अष्टाध्यायी ग्रंथ है.

4. निरुक्त: भाषा विज्ञान से संबंधित यह ग्रंथ भाषाशास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है. इसकी रचना यास्क ने की.

5. छंद: वैदिक मंत्र छंदबद्ध हे. छंद के नाम वैदिक संहिता तथा ब्राह्मण ग्रंथ मे मिलते है. पिंगल मुनी का छंद शास्त्र ग्रंथ महत्वपूर्ण है.

6. ज्योतिष: शुभ मुहूर्त मे यज्ञ अनुष्ठान करणे, ग्रह एवं नक्षत्र का अध्ययन कर सही समय याद करने की विधि से वेदांग ज्योतिष का उदय हुआ. लगध मुनी का वेदांग ज्योतिष महत्त्वपूर्ण माना जाता है.

स्मृती साहित्य: प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अध्ययन स्त्रोत के रूप मे स्मृतियों का विशेष महत्व है.

1. मनुस्मृति (इस पु 200 से 200 इस)
2. याज्ञवलक्क्य स्मृति (इस100 से 300 इस)
3. नारदस्मृती (इस 300 से400 इस)
4. पाराशर स्मृती (इस 300 ते 500 इस)
5. बृहस्पती स्मृती (इस 300से 500 इस)
6. कात्यायन स्मृती(इस 400 से600 इस)

वैदिक परंपरा , समाज जीवन का अध्ययन स्मृतिग्रंथो से होता है. इन मे मनुस्मृती सबसे प्राचीन है, शेष गुप्तकालीन है. कालांतर मे इन स्मृतिग्रंथो पर विभिन्न विद्वानो द्वारा टीका भी लिखी गई. यह भी इतिहास अध्ययन के साधन माने जाते है.

पुराण: पुराण का शाब्दिक अर्थ प्राचीन आख्यान होता है. पाचवी से चौथी शताब्दी इस पूर्व मे पुराणग्रंथ अस्तित्व मे आ चुके थे. पुरानो के अंतर्गत हम प्राचीन शासको की वंशवलिया पाते है. पुरानो के संकलन करता महर्षी लोमहर्ष तथा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते है. पुराण सरल व व्यवहारिक भाषा मे लिखे गये जनता के ग्रंथ है जिने प्राचीन ज्ञान विज्ञान, पशुपक्षी ,वनस्पती विज्ञान, आयुर्वेद आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है. पुरानो की संख्या 18 है.. मत्स्य, मार्कंडेय, भविष्य, भागवत, ब्राह्मण, ब्रह्मावेवर्त, ब्रह्म ,वामन, बराह, विष्णू, वायू, अग्नी, नारद, पदम, लिंग ,गरुड, कुर्म, स्कंदपुराण. इन 18 पुरानो के साथ अठरा उपपुराण भी माने गये है. पुराण ग्रंथ राजनीतिक इतिहास के महत्वपूर्ण स्त्रोत माने जा सकते है.

महाकाव्य: रामायण

भारत के संपूर्ण धार्मिक साहित्य मे रामायण महाकाव्य को महत्वपूर्ण आदरणीय स्थान है. इनसे हमे प्राचीन भारतीय संस्कृती के विविध पक्ष का संपूर्ण विवरण प्राप्त होता है. रामायण मे जी नैतिक मूल्य एवं

आदर्शोका प्रतिपादन किया गया है, वे सार्वभौम मान्यता प्राप्त है साथ ही उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है. रामायण की रचना महर्षी वाल्मिकी द्वारा की गई थी. महाभारत मे वाल्मिकी के लेखन मे रामायण की संक्षिप्त कथा भी मिलती है. जिससे विदित होता है की रामायण महाभारत से भी प्राचीन है. रामायण के रचना काल मे विद्वानो मे मतभेद है . रामायण मे हमे आर्य और अनार्य संघर्ष का पता चलता है. इस समय की राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी राजा राम के मंत्रीपरिषद के माध्यम से मिलती है. राम के उत्तराधिकारी निर्वाचित होने के समय प्रमुख पुरुषो की एक सभा होने का पता चलता है. अयोध्या कांड मे प्रशासन के 18 विभाग ओके जानकारी मिलती है ऋग्वेद की तरह रामायण से भी वर्णव्यवस्था के उदय का पता चलता है. कृषी की महकता को प्रतिपादित करते हुए सीता के पिता राजा जनक को हल चलाते दिखाया गया है. राम द्वारा अश्वमेघ यज्ञ किये जाने का उल्लेख स्पष्ट करत आहे की उस समय मे राजनीतिक सामाजिक जीवन मे योग्य संस्था का स्थान महत्वपूर्ण था. सीता का अपहरण सीता का निष्कासन उस समय की नारी जीवन की निम्नता को दर्शाता है.

महाभारत:

महाभारत की रचना वेद व्यासने की थी. महाभारत एक लाख श्लोको का संग्रह है, इसलिये इसे शत सहस्त्र संहिता भी कहा जाता है. महाभारत मे अन्य विदेशी जातीय का उल्लेख मिलता है. महाभारत से पता चलता है की कोई भी शारीरिक अयोग्यता राजपद के लिए अयोग्य माने जाती थी. धृतराष्ट्र को नेत्रहीन होने के कारण राजा नही बनाया गया था. महाभारत मे छब्बीस मंत्रियों की संख्या बताई गई है जो चारो वरून से लिये जाते है. महाभारत मे उल्लेख है जिस प्रकार ब्राह्मण वेद पर, स्त्री अपने पती पर निर्भर करती है उसी प्रकार राजा अपने मंत्री उपर निर्भर करते है. उस समय विभाग को तीर्थ कहा जाता था. महाभारत मे राजतंत्र एवं गणतंत्र राज्य का उल्लेख मिलता है. महाभारत के शांती पर्व मे लिखा है की चारो वर्ण को वेद सुनना चाहिए. इसमे भी युधिष्ठिर को हल चलाते हुए दिखाया गया है ,इससे कृषी कार्य का महत्व पता चलता है. कौरव पांडव युद्ध के माध्यम से उस समय की राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है.

जैन साहित्य:

जैन साहित्य को आगम कहा जाता है जिसमे 14 पूर्व 12 अंग, 12 उपांग, दस प्रकीर्णक आते है. जैन मुल प्राकृत भाषा मे लिखा गया, जिस का दृष्टिकोन धर्मपूरक ही रहा. ऐतिहासिक जैन ग्रंथो मे परिशिष्ट पर्व, भद्रबाहू चरित, आचरण सूत्र, भगवती सूत्र, कल्पसूत्र, उपासक-दशांग सूत्र आधी का उल्लेख मिलता है. इन मे अनेक ऐतिहासिक घटनाओ के साथ सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन की जानकारी मिलती है. इसके अलावा आदी पुराण, समय सार, हरिवंश पुराण, पांडव पुराण इन ग्रंथो के माध्यम से भारतीय संस्कृती का अध्ययन किया जा सकता है. प्राकृत भाषा के अतिरिक्त संस्कृत, अपभ्रंश, तमिल, तेलगू, कन्नड भाषा मे भी जैन साहित्य का निर्माण हुआ.

बौद्ध साहित्य:

गौतम बुद्ध के निर्माण के पश्चात उनके सिद्धांत को विविध संगतीयो मे संकलित कर तीन पिटको मे विभाजित किया गया.

विनयपिटक: इसमे बौद्ध संघ संबंधित नियम, दैनिक आचार विचार का समावेश हे इसका संकलन बुद्ध के शिष्य उपाली ने किया था .

सुत्तपिटक: इसमे बौद्ध धर्म के सिद्धांत तथा उपदेशो का संग्रह है. शिष्य आनंदने उसका संकलन किया था.

अभीधम्मपिटक: यह प्रश्नोत्तर रूप मे है और इसमे बौद्ध धर्म के दार्शनीक सिद्धांतो का संग्रह है.

जातक कथा: गौतम बुद्ध के पूर्व जन्म से संबंधित 549 कथा इसमे मिलती है.

दीपवंश, महावंश, मिलिंद पणहो, आर्य मंजुश्री मूलकल्प, अंगुत्तर निकाय इन ग्रंथो से भी ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है.

धर्मनिरपेक्ष /लौकिक साहित्य:

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य भी प्राचीन भारतीय इतिहास पर समुचित प्रकाश डालता है. इसके अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अर्ध ऐतिहासिक ग्रंथ तथा जीवन वृत्तांत, कथा, नाटक, कादंबरी का समावेश किया जा सकता है जिससे प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने मे मदत मिलती है.

अर्थशास्त्र: प्राचीन ऐतिहासिक रचनामे सर्वप्रथम उल्लेख आचार्य विष्णू गुप्त/कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र का किया जा सकता है. मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीति के ज्ञान के लिए यह एक प्रमुख स्त्रोत है.

नीती सार: कामंदक रचित नीतीसार मे दसवी शताब्दी के राज्यस्व सिद्धांत तथा राजा के कर्तव्य पर प्रकाश डाला गया है.

राज तरंगिनी: प्राचीन भारतीय इतिहास में शुद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ के रूप मे राज तरंगिनी ग्रंथ को कलहन द्वारा लिखा गया है. यह संस्कृत साहित्य मे ऐतिहासिक घटना के क्रमबद्ध इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास है जिसमे काश्मीर का इतिहास मिलता है. इसमे काव्य एवं इतिहास का सुंदर समन्वय दिखाई देता है. कलहने अपने इतिहास की पुष्टी समकालीन लेखो मे भी की है. उसका लेखन पूर्वाग्रह से पूर्णतः मुक्त दिखाई देता है.

मुद्रा राक्षस: विशाखादत्त कृत नाटक मुद्रा राक्षस मे चाणक्य की कुटनिती द्वारा नंदवंश की के समाप्ती एवम चंद्रगुप्त मौर्य के राज्यरोहण पर प्रकाश डाला गया है.

अष्टाध्यायी तथा वार्तिक.. इन ग्रंथो मे मौर्य के पूर्व के इतिहास तथा मौर्य योगीन राजनीतिक अवस्था की जानकारी मिलती है.

गार्गी संहिता: या एक ज्योतिष्य ग्रंथ हे, जिसमे भारत पर होने वाले यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है.

महाभाष्य: इसके रचिता पतंजली, पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे, इस ग्रंथ से शुंगो के इतिहास की जानकारी मिलती है.

मालविकाअग्नी मित्र: कालिदास कृती यह नाटक शुंगकालीन राजनीतिक परिस्थितीओ तर प्रकाश डालता है.

बुद्ध चरित्र: अश्वघोष कृत इस रचना से गौतम बुद्ध के समकालीन सामाजिक जीवन की जानकारी मिलती है.

हर्षचरित: बाणभट्टकृत हर्ष चरित्र सम्राट हर्षवर्धन की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है.

गोडवाहो: वाकपती के ग्रंथ मे कन्नोज नरेश यशोवरमन के राजनीतिक जीवन की जानकारी मिलती है.

पृथ्वीराज रासो: चंदबरदाई द्वारा रचित इस ग्रंथ से चौहान वंश की जानकारी मिलती है.

कुमारपाल चरित: हेमचंद्र रचित इस ग्रंथ से चालुक्य शासको की जानकारी मिलती है.

विदेशी यात्रियों का विवरण:

भारतीय इतिहास को जानने के धर्मनिरपेक्ष साहित्यिक स्त्रोतो मे विदेशी यात्रियों के यात्रा वृत्तांतो का महत्वपूर्ण स्थान है. इनके भारत आगमन का उद्देश कुछ भी रहा हो, परंतु इनके विवरण मे हमे भारत की कला, संस्कृती, धार्मिक परंपरा, सामाजिक आचार विचार, भौगोलिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थिती की मूल्यवान जानकारी मिलती है. दुसरे लोक हमारे बारे में क्या विचार रखते है ये जिज्ञासा हमेशा कौतुहल से भरी होती है. इसलिये हम विदेशी व्यक्तियों के यात्रा वृत्तांत को ऐतिहासिक साधन के रूप मे भी देख सकते है.

मेगास्थेनीस: मेगास्थानीज मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की राज्यसभा में युनानी सेनापती सेलुकर निकेटर का राजदूत था. इसके ग्रंथ इंडिका मे भारत संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है. या ग्रंथ अपने मूल रूप मे विलुप्त है. मगर पर्वती द्वारा इसके उद्धरण मिलते है. इससे मोरे कालीन शासन, सामाजिक स्थिती, आर्थिक स्थिती की जानकारी मिलती है. भारत तथा रोमन साम्राज्य के बीच होने वाले व्यापार के वस्तू की जानकारी भी इससे मिलती है.

डाय मेकस: यह मौर्य सम्राट बिंदुसार की राजसभा मे युनानी सम्राट अंत्योकश का राजदूत था. लेकिन इनके यात्रा वृत्तांत की जानकारी प्राप्त नही हुई है.

फाहयान: बौद्ध धर्म का अभ्यासक, चिनी यात्री फाह्यान सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के समय भारत आया. इसके

विवरण असे गुप्तकालीन समाज एवं बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है.

यु एन स्तांग: यह बौद्ध चिनी सम्राट हर्षवर्धन के काल मे भारत आया था. उसका यात्रा वृत्तांत सी यु के नाम से जाना जाता है. इसे यात्रियों का राजकुमार भी कहा जाता है.

इतसिंग: यह चिनी बौद्ध यात्रिता जो पश्चिम उत्तर भारत की यात्रा पर आया था, भारत के बौद्ध धर्म ग्रंथो का अध्ययन कर भाषांतर भी इसने किया.

अलबेरूनी: यह महमूद गजनी के साथ भारत आया. इसने अपनी कृती तहकीक ए हिंद मे राजपूत कालीन समाज, धर्मरिती रिवाज राजनीती पर तर्कसंगत प्रकाश डाला है.

पुरातत्वीय साधन: पुरातत्त्वविद्याने प्राचीन भारत के इतिहास को जूटाने मे पर्याप्त योग दिया है. इसके अंतर्गत शिलालेख, मुद्रा, स्मारक द्वारा प्राप्त जानकारी का वर्णन किया जा सकता है.

शिलालेख: ऐतिहासिक खोज मे महत्वपूर्ण स्थान रखती है. वे धातू और पत्थर पर अंकित है इसलिये इनकी प्रामाणिकता मे संदेह नही किया जा सकता. शीलालेखो से तत्कालीन लेखन शैली का पता चलता है. शिलालेखचे अपने देश और समय की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अवस्था के बारेमे विश्वसनीय प्रमाण मिलता है. प्राचीन भारत के व्यापारीक, धार्मिक, उपदेशात्मक प्रशासनिक प्रशंसात्मक, समर्पणीय अभिनंदन तथा साहित्यिक शिलालेख उपलब्ध है. प्रशंसात्मक शिलालेख राजनीतिक दृष्टी से महत्वपूर्ण है. इनमे राजा की वंशावली, उनका नाम, राजा का पूर्व चरित्र, युद्ध प्रणाली, राजनीतिक आदर्श की जानकारी मिलती है. प्राचीन समय मे दानलेखोमे प्राय ताम्र धातू काही प्रयोग होता था. तांबे के पत्र पर लिखे गयी शिलालेख ताम्रपट, ताम्रपत्र, ताम्र शासन कहे जाते थे. इस समय भूमी अनुदान ताम्रपत्र पर ही अंकित किये जाते थे. ये ताम्रपट मोटाई और आकार मे विभिन्न प्रकार के थे.

मुद्रा विज्ञान: भारतीय मुद्राव का अध्ययन भी प्राचीन भारत के इतिहास पर प्रकाश डालता है. मुद्रा देश के इतिहास के निर्माण में हमारे सहायता करती है. केवल इन मुद्राओ से काही बार हमे विभिन्न राजाओके अस्तित्व का भी पता चलता है. ये हमे कालक्रम का निर्णय करणे मे भी सहायता करती है सहाय्यता करती है. मुद्राओ के विभिन्न प्राप्ती स्थान से संबंधित राजा के राज्य विस्तार का पता चलता है. भारत मे पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त होने वाली रोमन मुद्राओ से पता चलता है की किसी समय मे भारत और रोमन साम्राज्य के बीच बडी मात्रा मे व्यापार होता था. इन से भारतीय की आर्थिक स्थिती तथा उनके समुद्र पार जाने का पता चलता है. इन मुद्रा उपर राजाओ के चित्र भी अंकित है, उनके आधार पर उन राजाओ के जीवन का पता चलता है तथा देश की आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है. प्राचीन भारत की मुद्राओ पर पौराणिक कथा के स्थान पर चित्र या संकेत है. भारत पर युनान के आक्रमण के पश्चात मुद्राओ पर राजाओ का नाम भी अंकित किया जाने लगा. इतिहासकार स्मिथ के अनुसार... प्राचीन भारत मे राजकोष के अलावा शिल्प संघ, श्रेणी भी मुद्राये बनाती थी, पर इसके लिये राजा या नियंत्रक के हस्ताक्षर अनिवार्य होते थे. इस समय मे सुवर्ण और चांदी की मुद्राव का भी प्रचलन था. वर्तमान मे राष्ट्रीय, राज्य संग्रहालय मे बडी मात्रा मे मुद्राओ का संकलन किया गया है, इन सबका गहन अध्ययन अतिरिक्त प्रमानो का स्त्रोत होगा.

स्मारक: पत्थर ,धातू, मिट्टी की मुर्तिया तथा प्रसाधन सामग्री और आभूषनो के टुकडे, मिट्टी के बर्तन, दैनिक उपयोग की वस्तूये इन सबसे प्राचीन भारत की विश्वसनीय जानकारी प्राप्त होती है. हडप्पा मोहनजोदडो तथा तक्षशिला की भूमिकी खुदाई से नये ऐतिहासिक तथ्य प्रकाश मे आये है जो पहले अंधकार मे थे. इस खुदाई ने प्राचीन भारत के इतिहास का रूप ही बदल दिया है. पाटलीपुत्र के प्राचीन स्थानो की खुदाई से मौर्यकालीन राजधानी पर प्रकाश पडता है. सारनाथ की खुदाई से बौद्ध धर्म और अशोक की संबंधित जानकारी

प्राप्त हुई है. विशेष कर भारतीय कला के अध्ययन के रूप में स्मारक का अपना महत्व है. मौर्य समय की गुफा कला, शिल्पकला इसका अनुपम उदाहरण है. गुप्त कला को मूर्ती कला के कारण सन्मान प्राप्त है. गुप्त मूर्तीयोसे मालूम होता है कि विष्णू और उसके विभिन्न अवतारो की पूजा उस समय बहुत लोकप्रिय थी. मथुरा से प्राप्त विष्णू की मूर्ती गुप्त कलाकार श्रेष्ठ उदाहरण है. गुप्त युग मे मंदिर निर्माण कला के साथ साथ और विहारो का भी बडी मात्रा मे निर्माण हुआ. टेराकोटा भी गुप्तकाल की एक मुख्य विशेषता थी. गुप्त काल मे गुफा मे दिवारोपर चित्रकला का अंकल भी हुआ, उनमे से अधिकांश चित्र धर्मनिरपेक्ष हे. इस समय चित्रकला में रूप रेखा की कोमलता, रंगो की उज्वलता और अनुपम भावपूर्णता दिखाई देती है. गुप्त कला की बौद्धिकता के लिए उसकी प्रशंसा की गई है. दक्षिण भारत मे पल्लव वंश के समय मे मंदिर स्थापत्यशैली का विकास हुआ, जिम मे महेंद्र शेली, महाबलीपुरम शैली, राजसिंह शैली, अपराजिता शैली का उल्लेख मिलता है. इस प्रकार से प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन हेतू पुरातत्त्विक साधनो का भी विशेष महत्त्व दिखाई देता है.

मूल्यमापन

A. इंडोलोजी के अध्ययन हेतू प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का जतन करना होगा. भारतीय संस्कृती एवं सभ्यता की धरोहर को बनाये रखने के लिए वर्तमान मे नई शिक्षा नीती के अंतर्गत सभी शाखाओ के अभ्यासक्रममे भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थान दिया गया है. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस विषय पर विचार मंथन हेतू आंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के संमेलनो का आयोजन किया जाना जरुरी हो गया है. भारत की सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पिढी को हस्तांतरित करने का यह सटीक उपाय होगा.

B. वर्तमान मे वैश्विक स्तर पर पूर्वीय एवं पाश्चिमात्य ज्ञान के बीच अपनी श्रेष्ठता को प्रतिपादित करने की स्पर्धा चल रही है. विजेताओ का इतिहास रचित होने पर अपने विचारो को अधिक महत्त्व दे सकता है. इसस्थिती मे भारतीय ज्ञान परंपरा का अवलोकन करना अनिवार्य होगा, यही समय की मांग है. ज्ञान परंपराचे जानकारी मिलती है की प्राचीन युग मे कलाव का अध्ययन व्यापक रूप से होता था क्यूकी पुरुषो की 72 कला तथा महिलाओ के 64 कलाका उल्लेख साहित्य मे मिलता है. इन कलाओ मे मानव के शारीरिक, मानसिक ,बौद्धिक विकास की शक्ती निहित होती थी. प्राचीन समय मे वैदिक जैन तथा बौद्ध धार्मिक संघवी विद्या प्रचार प्रसार के अत्यंत प्रभावशाली शिक्षा केंद्र थे. प्राचीन शिक्षा प्रणालीने भारतीय ज्ञान संस्कृती एवं कला को विदेशो मे स्वतंत्र पहचान प्रदान की.

C. आज आधुनिकीकरण, भू मंडलीकरण के प्रभाव से सभी पुरानी प्राचीन बातो को नकारात्मक रूप से देखा जा रहा है. किंतु यह नियम किसी भी देश के सांस्कृतिक, अध्यात्मिक, नैतिक विरासत को सुरक्षित रखने मे असफल होगा. यदि भारतीय संस्कृती को समग्र रूप से जालना है तो ज्ञानपरंपरा को भी समजना होगा. इसीलिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ मे उच्च शिक्षण संस्थाओं के लिए दिशा निर्देश जारी दिये है. अब यह समाज का भी उत्तरदायित्व होगा की भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रवाह को निरंतर रूप से बनाये रखने के लिए प्रयास करे.

संदर्भसूची:

1. अग्रवाल व्ही; कला और संस्कृती; साहित्य भवन प्रा.ली.; इलाहाबाद. 1958,
2. जैन जगदीश चंद्र; प्राकृत साहित्य का इतिहास; चौखंबा विद्या भवन; वाराणसी 1993.
3. लुनिया बी एन; प्राचीन भारतीय संस्कृती; शिक्षा साहित्य प्रसारक मंडळ आग्रा; 1966.
4. मिश्रा जयशंकर; प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास; बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना 1974.
5. उपाध्याय रामजी, प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, देव भारती प्रकाशन, इलाहाबाद.1966.

6. विद्यालंकार सत्य केतू, प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन, श्री सरस्वती सदन नई दिल्ली, 1978.
7. गुप्त एसपी, इंडियन हिस्टरी कल्चर अँड ऑर्किऑलॉजी, दि ऑर्किऑलॉजी सोसायटी न्यू दिल्ली, 1991.
8. गोखले बीजी, एनीशंट इंडिया, आशिया पब्लिशिंग हाऊस, बॉम्बे.1954.
9. मिराशी व्ही व्ही, स्टडीज इन अनीशंट इंडियन हिस्टरी, महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड फॉर लिटरेचर अँड कल्चर मुंबई.1984.
10. दत्त आर सी, हिस्टरी ऑफ सिव्हिलायझेशन इन एनीशंट इंडिया, विशाल पब्लिशर्स दिल्ली, प्रथम संस्करण.
11. पांडेय राजेंद्र, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश, लखनऊ 2002.